

1

---

---

---

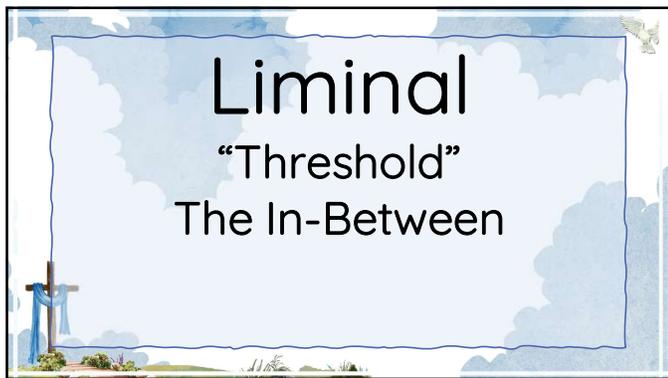
---

---

---

---

---



2

---

---

---

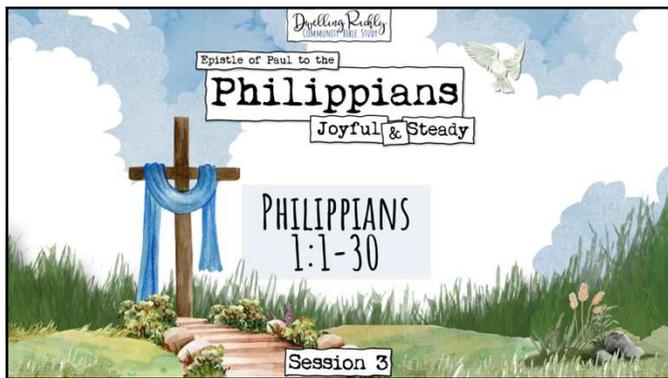
---

---

---

---

---



3

---

---

---

---

---

---

---

---

Philippians 1:1-30 || Joy in the In-Between

- The Posture of Joy (vv. 1-11)
- The Perspective of Joy (vv. 12-18a)
- The Purpose of Joy (vv. 18b-26)
- The Perseverance of Joy (vv. 27-30)

DWELL—Discover, Wonder, Examine, Link, Live

4

---

---

---

---

---

---

---

---

“Paul and Timothy, **servants** (*doulos*, DOO-los) of Christ Jesus, to all the **saints** (*hagios*, ‘holy ones’) in Christ Jesus who are at Philippi, with the overseers (*episkopoi*) and deacons (*diakonoi*): Grace (*charis*) to you and peace (*eirēnē*) from God our Father and the Lord Jesus Christ.”

5

---

---

---

---

---

---

---

---

“...and you shall be to me a kingdom of priests and a holy nation...”  
Exodus 19:4

“ecclesiology”

6

---

---

---

---

---

---

---

---

“Paul and Timothy, servants (*doulos*, DOO-los) of Christ Jesus, to all the saints (*hagios*, “holy ones”) in Christ Jesus who are at Philippi, with the overseers (*episkopoi*) and deacons (*diakonoi*); Grace (*charis*) to you and peace (*eirēnē*) from God our Father and the Lord Jesus Christ.”

7

---

---

---

---

---

---

---

---

**DWELL—Discover:**  
 Who does God say you are?  
 A Slave Saint.  
 A holy servant  
 A *doulos* and *hagios*.

8

---

---

---

---

---

---

---

---

“I thank my God in all my remembrance of you, always in every prayer of mine for you all making my prayer with joy, because of your partnership (*koinōnia*) in the gospel (*euangelion*) from the first day until now...”

9

---

---

---

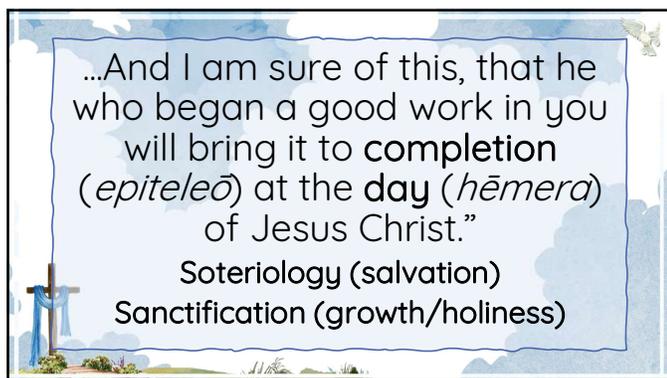
---

---

---

---

---



10

---

---

---

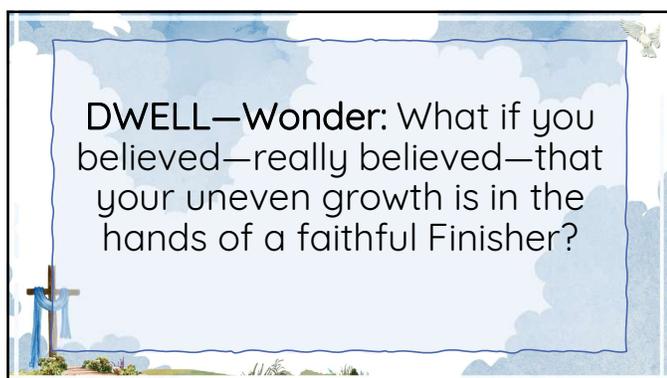
---

---

---

---

---



11

---

---

---

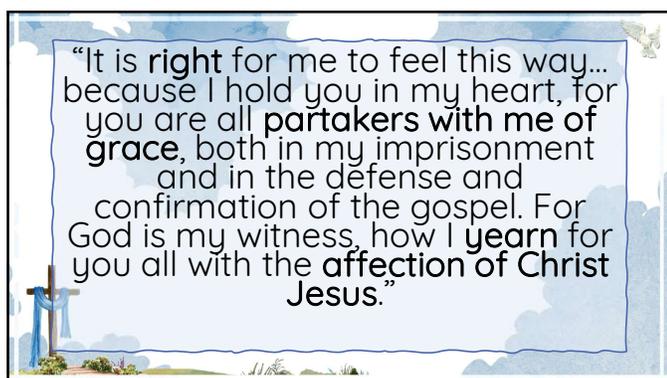
---

---

---

---

---



12

---

---

---

---

---

---

---

---

“And it is my prayer that your love may abound more and more, with knowledge and discernment, so that you may approve what is excellent, and so be **pure (sincere)** (eilikrinés) and blameless for the day of Christ, filled with the fruit of righteousness that comes through Jesus Christ, to the glory and praise of God.”

13

---

---

---

---

---

---

---

---

DWELL—Examine: Where is your “love” more avoidance than discernment? Love without truth isn’t love; truth without love isn’t Christlike.

14

---

---

---

---

---

---

---

---

“I want you to know, **brothers and sisters**, that **what has happened to me** has really **served to advance the gospel**, so that it has become known throughout the whole **imperial guard** and to all the rest that my imprisonment is **for Christ**. And most of the brothers, having become **confident in the Lord by my imprisonment**, are much more **bold** to speak the word **without fear**.”

15

---

---

---

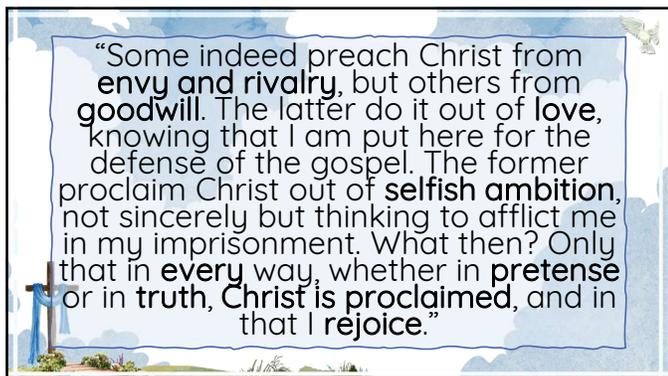
---

---

---

---

---



“Some indeed preach Christ from **envy and rivalry**, but others from **goodwill**. The latter do it out of **love**, knowing that I am put here for the defense of the gospel. The former proclaim Christ out of **selfish ambition**, not sincerely but thinking to afflict me in my imprisonment. What then? Only that in **every** way, whether in **pretense** or in **truth**, **Christ is proclaimed**, and in that I **rejoice**.”

16

---

---

---

---

---

---

---

---



**DWELL—Link:** Where are you letting someone else’s motives take the steering wheel of your joy? Hand it back to Christ.

17

---

---

---

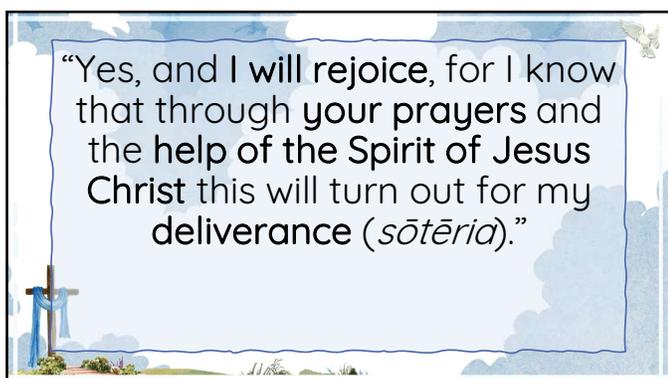
---

---

---

---

---



“Yes, and I will rejoice, for I know that through **your prayers** and the **help of the Spirit of Jesus Christ** this will turn out for my **deliverance** (*sōtēria*).”

18

---

---

---

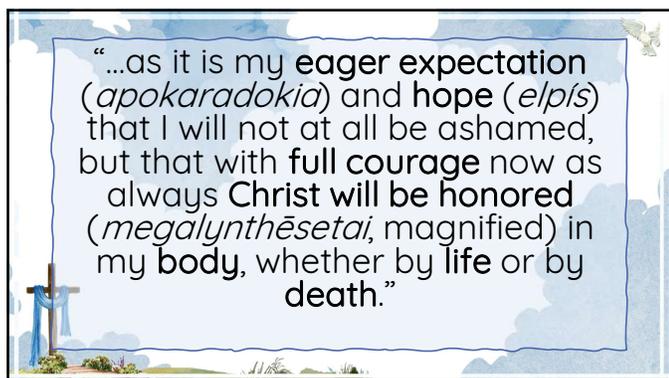
---

---

---

---

---



19

---

---

---

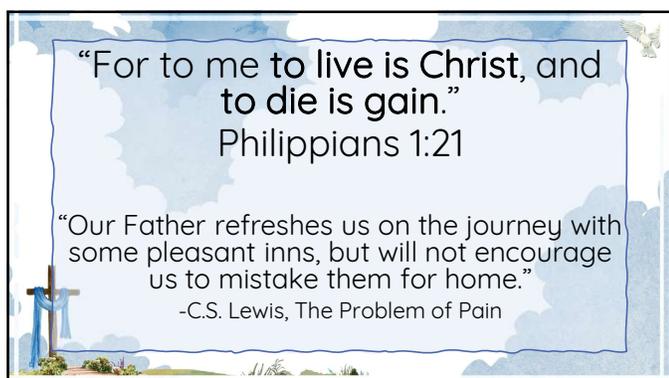
---

---

---

---

---



20

---

---

---

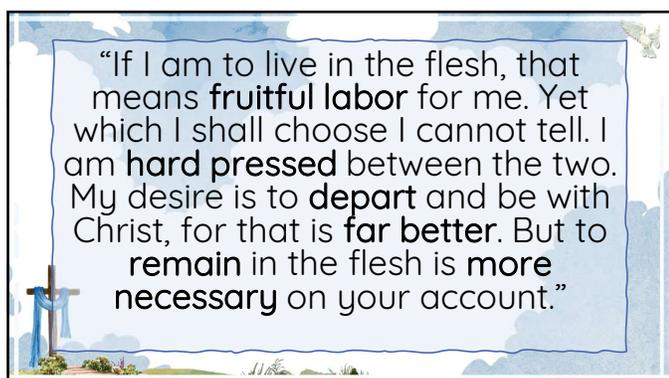
---

---

---

---

---



21

---

---

---

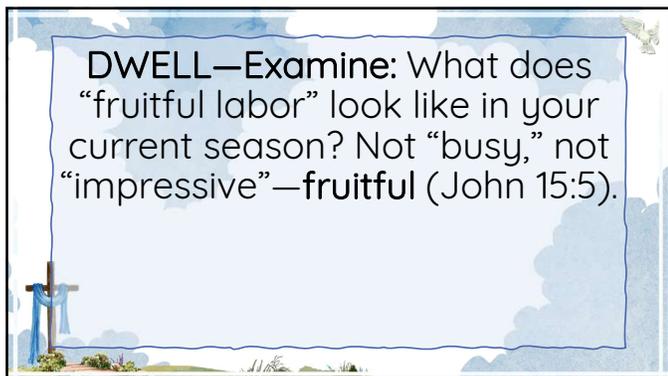
---

---

---

---

---



22

---

---

---

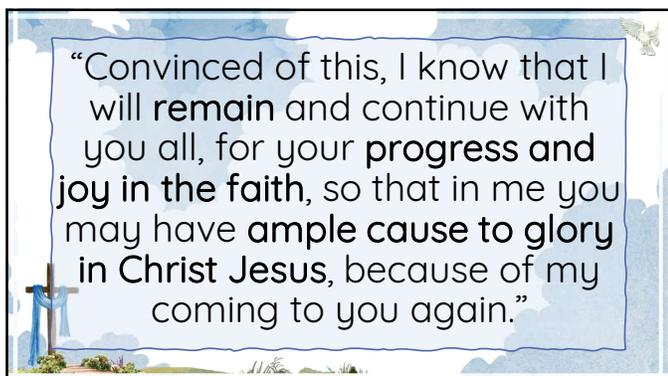
---

---

---

---

---



23

---

---

---

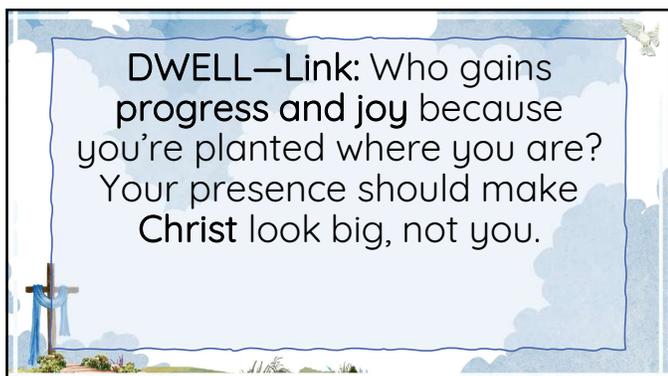
---

---

---

---

---



24

---

---

---

---

---

---

---

---

- The Posture of Joy (vv. 1-11)
- The Perspective of Joy (vv. 12-18a)
- The Purpose of Joy (vv. 18b-26)
- *The Perseverance of Joy* (vv. 27-30)

25

---

---

---

---

---

---

---

---

“Only let your **manner of life** be **worthy** (*axios*) of the gospel of Christ...” The phrase “manner of life” translates *politeuesthe*—**live as citizens**. Remember Philippi’s pride as a Roman colony. Paul says: you have a **greater** citizenship. Live like heaven’s people **now**.

26

---

---

---

---

---

---

---

---

- Ex. 14:13 “Fear not, stand firm, and see the salvation of the LORD, which he will work for you today. For the Egyptians whom you see today, you shall never see again.
- Eph. 6:13 Therefore take up the whole armor of God, that you may be able to withstand in the evil day, and having done all, to stand firm.
- 1 Pet. 5:9 Resist him, firm in your faith, knowing that the same kinds of suffering are being experienced by your brotherhood throughout the world.

27

---

---

---

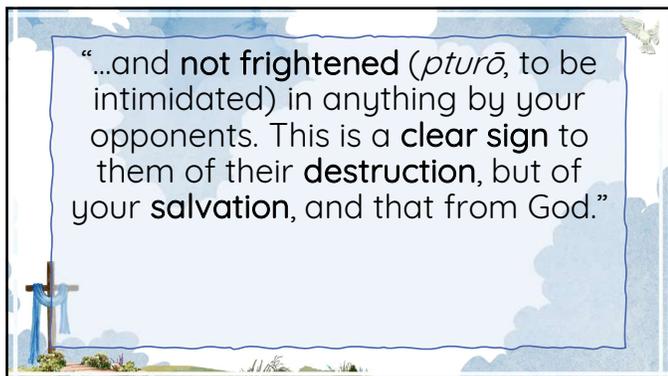
---

---

---

---

---



28

---

---

---

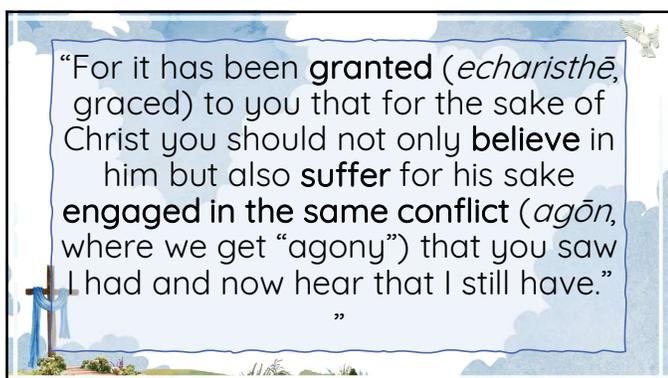
---

---

---

---

---



29

---

---

---

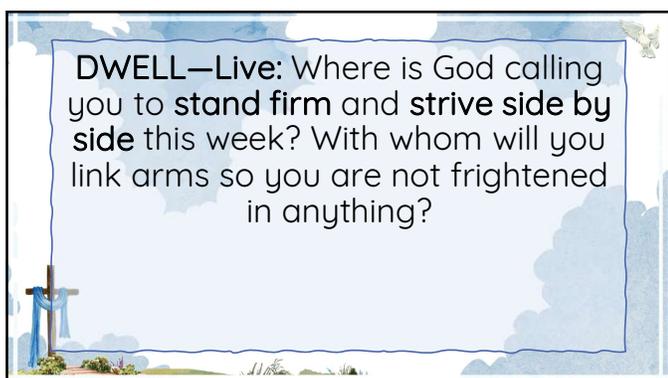
---

---

---

---

---



30

---

---

---

---

---

---

---

---

- **Posture of Joy:** servants and saints; grateful partnership; love that thinks; eyes on the Day.
- **Perspective of Joy:** chains that preach; motives named, but Christ proclaimed and joy chosen.
- **Purpose of Joy:** prayer and the Spirit's help; eager expectation; courage that magnifies Christ in body—life or death; to live is Christ; to die is gain; fruitful labor now, better by far then.
- **Perseverance of Joy:** live as citizens worthy; stand firm, one Spirit, one mind; strive shoulder to shoulder; do not fear; grace to believe and to suffer; share the same conflict.

31

---

---

---

---

---

---

---

---

- **Philippians 1:6** — *He who began a good work in you will bring it to completion at the day of Jesus Christ.*
- **Philippians 1:21** — *For to me to live is Christ, and to die is gain.*

32

---

---

---

---

---

---

---

---

Drilling Ridley  
COMMUNITY BIBLE STUDY

Epistle of Paul to the

# Philippians

Joyful & Steady

*He who began a good work in you will bring it to completion at the day of Jesus Christ*  
Philippians 1:6

33

---

---

---

---

---

---

---

---